

ZÚME जुमे सत्र 1 का वीडियो स्क्रिप्ट्स

बत्तख के बच्चों वाली शिष्यता

जुमे ट्रेनिंग पर वापस स्वागत है

इस सत्र हम सीखेंगे कि कैसे बत्तखों के बच्चे जो बस तैरना सीख रहे हो हमारी मदद कर सकते हैं शिष्य बनाने के दो सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत समझने में.

क्या कभी आपने बत्तख के बच्चों को बाहर शैर करते हुये देखा है.

चाहे आप दुनिया में कहीं भी हो, ये हमेशा एक सा ही दिखता है. एक बत्तख माता नेतृत्व करती है और उसके बच्चे उसके पीछे चलते हैं, एक एक करके सभी एक कतार में. माता बत्तख आगे चलती है, छोटी बत्तखें पीछे आती हैं. पर यदि आप नज़दीक से भी देखें, आप देखेंगे कि कुछ और भी हो रहा है. हर छोटी बत्तख एक ही समय पर दो भूमिकायें निभा रही है. हर छोटी बत्तख अनुयायी है, क्योंकि वो माँ बत्तख का अनुसरण कर रही है या एक और किसी बत्तख का जो ठीक उसके आगे चल रही है.

और एक ही समय

हर छोटी बत्तख स्वयं में नेता है. क्योंकि वो बत्तख के बच्चों को नेतृत्व कर रही है. (या बत्तख के चुजों का) जो उसके ठीक उसके पीछे चल रही है.

तो क्या एक बत्तख का चुजा अनुयायी है या नेता. ये दोनों ही हैं.

इसलिये शैर पर जाती बत्तखों का बहुत संबंध है शिष्य बनाने से.

परमेश्वर चाहते हैं कि उनका परिवार दूर सुदूर बड़े. इसलिये वो अपेक्षा करते हैं हर अनुयायी से नेता बनने की. हर विश्वासी साझा करने वाला हो. और हर शिष्य, शिष्य बनाने वाला हो एक ही समय पर.

एक फंदा जिसमें हम फंसते हैं शिष्य और शिष्य निर्माता के रूप में वो है ये झूठा विश्वास कि हमें सबकुछ जानने की जरूरत है या बहुत सी बातें जानने की जरूरत है, इससे पहले कि हम कुछ साझा कर सकें.

पर शिष्यता इस तरह काम नहीं करती.

शिष्य बत्तख के बच्चों की तरह होते हैं. नेता बनने के लिये उन्हें हर कुछ जानने की जरूरत नहीं. उन्हें बस एक कदम आगे चलना है.

परमेश्वर चाहते हैं कि उनका परिवार वफादारी में बढ़े । इसलिये वो अपेक्षा करते हैं कि हर नेता एक अनुयायी हो । हर साझा करने वाला विश्वासी हो. और हर शिष्य निर्माता एक शिष्य हो एक ही समय पर ही.

एक और फंदा जिसमें हम फंसते हैं शिष्य और शिष्य निर्माताओं के रूप में, ये झूठा विश्वास कि कोई कहीं सबकुछ जानता है. और यदि हम उन्हें ढूँढ़ें और उनके पीछे चलें फिर हमें सेट है.

पर इस तरह भी शिष्यता काम नहीं करती. परमेश्वर के राज्य में केवल एक ही माँ बत्तख है जिसका हम सब अनुसरण करते हैं और वो है यीशु मसीह.

कोई मिशनरी नहीं, कोई पॉस्टर नहीं, कोई सेमिनरी प्रोफेसर नहीं, केवल यीशु ही हमारे विश्वास की पूरी मात्रा के हकदार हैं.

बाकी के हम सब प्रक्रिया में हैं.

हमेशा कोई न कोई यीशु के करीब होगा जिसके पीछे हम चल सकते हैं. और कोई बहुत ही दूर होगा जिसका हम नेतृत्व कर सकते हैं. पर चाहे हमारी स्थिति कोई भी हो पर हमारे आंखें, हमारे हृदय हमेशा पूरी तरह यीशु पर लगी रहनी चाहिये.

बाईबल में पौलुस जिसने नये नियम का ज्यादातर भाग लिखा है. और उसने ही बहुत ही प्रथम कलीसियायें शुरू की. उसने बस ये ही नहीं लिखा - मेरे पीछे हो लो. उसने लिखा - मेरे पीछे हो लो जैसे मैं यीशु के पीछे चलता हूँ. पौलुस वो जानता था जो हर स्थान पर बत्तख के बच्चे जानते हैं .

और जिसे हर शिष्य को जानने की जरूरत है. परमेश्वर के राज्य में हर नेता को एक अनुसरणकर्ता होने की जरूरत है. और हम सब यीशु का अनुसरण करते हैं.

बाइबल में पौलुस ने ये भी लिखा - जो बातें तूने बहुत से गवाहों के सामने मुझसे सुनी है उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे जो दूसरो को भी सिखाने के योग्य हो. पौलुस वो जानता था जो सब जगह की बत्तखों के चूजे जानते हो और जिसे हर शिष्य को भी जानने की जरूरत है. परमेश्वर के राज्य में हर अनुयायी को नेता होने की जरूरत है. हर हम सबको यीशु की तरह नेतृत्व करना चाहिये. दूसरों के लिये अपना जीवन कुर्बान करके.

यदि आप परमेश्वर के परिवार को दूर तक बढ़ते रहना देखना चाहते हैं और विश्वास में बढ़ना तब शिष्यों को बनाने के बारे में सोचिये बत्तख के चूजों की तरह. बन जाइये अनुयायी और नेता एक ही समय पर.